

P. S. SCIENCE & H. D. PATEL ARTS COLLEGE, KADI

Internal Examination

M. A. SEM - IV

[Mark : 40

22-3-2016]

Sanskrit - CC 404

[8-30 to 10-00

अलंकारशास्त्र - काव्यमीमांसा - (अ - 1 थी 5) - राजशेखर

1. नीचेनामांथी कोर्धपल त्रल सविस्तार सभजवो. 14

- (1) चित्रोदाहरणैर्गुर्वी ग्रन्थेन तु लधीयसी ।
इयं नः काव्यमीमांशा काव्यव्युत्पत्तिकारणम् ॥
- (2) "वेदोपवेदात्मा सार्ववर्णिकः पञ्चमो गेयवेदः" इति द्रौहिणिः ।
- (3) पौरुषेयं तु पुराणम्, आन्वीक्षिकी, मीमांसा, स्मृतितन्त्रमिति चत्वारि शास्त्राणि ।
- (4) मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः ।
यत्क्रोञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम् ॥
- (5) "काव्यकर्मणि कवेः समाधिः परं व्याप्रियते" इति श्यामदेवः ।
- (6) "उचितानुचितविवेको व्युत्पत्तिः" इति यायावरीयः ।

2. राजशेखर अनुसार कवि प्रकार यर्थो.

अथवा

14

दूकनोर्ध लणो. (गमे ते ले)

- (1) राजशेखरनुं ज्वन
- (2) काव्यपुरुषनी उत्पत्ति
- (3) काव्यपाक
- (4) काव्यहेतु

3. नीचेनामांथी कोर्धपल छ प्रस्नोला ले-त्रल वाक्योमां जवाल आपो. 12

- (1) काव्यमीमांसां राजशेखर पोताने माटे कर्ध संज्ञा प्रयोजे छे ?
- (2) राजशेखरनी कृतिओ जज्ञावो.
- (3) काव्यमीमांसा शब्द सभजवो.
- (4) काव्यमीमांसा ना बीज अध्यायनुं नाम जज्ञावो. आ अध्यायमां कवि शानी यर्था करे छे ?
- (5) आथार्थोना मतानुसार वेदांगो केटला छे ? क्या क्या ?
- (6) सरस्वतीओ काव्यपुरुषनी प्रशस्ति करता काव्यना क्या लक्षणो वर्णव्या छे ?
- (7) बुध्दिमान शिष्य कोने कहेवाय ?
- (8) सलज्ज अने आहार्या प्रतिभा केवी रीते उत्पन्न थाय छे ?